SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 2021-23

SUBJECT - Childhood and Growing up

TOPIC NAME - Language Development of child

DATE - 12/01/22

12 (भारत का Floating National Park - मणीपुर लोकटक झील (केबुल लामजाओ नेशनल पार्क) 13

* बालक का भाषायी विकास :-
(Language Development of child)

Introduction :- मानव सभी प्राणियों में बुद्धिमान प्राणी है जिसका विकास समाज में अपितु विभिन्न समुदायों में विभिन्न रहन-सहन, भाषा तथा संस्कृतियों में अलग-2 रूपों में होता है। मानव जाति की प्रमुख विशेषता है उसकी भाषा जो विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-2 प्रकार की होती है अतः भाषा का विकास और सभ्यता का विकास साथ-साथ चलता है।

चूँकि भाषा की योग्यता केवल मानव जाति में ही पाई जाती है यही भाषा मानव को एक समाज से दूसरे समाज में जोड़कर रखता है इसलिए विकासात्मक मनोविज्ञान की विभिन्न विषय-वस्तुओं में भाषा-विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है अतः भाषा विकास व्यक्ति को विभिन्न समाजों एवं समुदायों में जीवन यापन के लिए अति आवश्यक है ताकि व्यक्ति इसके माध्यम से अपने जीवन लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

* भाषा का अर्थ (Meaning of Language) :-

सामान्यतः भाषा का अर्थ है विचारों का आदान-प्रदान। अर्थात भाषा से तात्पर्य उन विचारों तथा अनुभूतियों का अर्थ व्यक्त करने वाले सभी साधनों से है जिसमें विचारों के आदान-प्रदान के सभी पक्ष जैसे - पढ़ना, लिखना, संकेत, चेहरे का हाव-भाव, मूक-अभिनय एवं कला तथा बोलना इत्यादि सम्मिलित है।

अतः भाषा संप्रेषण का एक लोकप्रिय माध्यम है जिसके माध्यम से बालक अपने विचारों, इच्छाओं और भावनाओं को

को दूसरे के साथ बात कर सकता है तथा दूसरे लोगो के विचारो को समझ सकता है इस तरह बालक का सामाजिक विकास भी भाषा पर ही आधारित होता है। अतः बालक का संपूर्ण विकास भाषा पर आधारित होता है।

* <u>भाषा की परिभाषा</u> :-

* <u>ब्लूमफील्ड एवं किच के अनुसार</u> :- "भाषा का तात्पर्य ऐसे कुछ अर्थहीन व्यैक्तिक प्रतीकों (जैसे ध्वनियों, आकारों, हाव-भाव) से है जिन्हे किसी नियमों के आधार पर संयुक्त करके असंख्य संदेशों का आदान-प्रदान किया जा सकता है।

* <u>स्वीट के अनुसार</u> :- "व्यापक अर्थों में भाषा का आशय निःसंदेह ऐसे साधन से है जिसके द्वारा अर्थ एवं भाव का लोगो के बीच संप्रेषण होता है।"

* <u>स्वीट के अनुसार</u> :- "भाषा ध्वनियों द्वारा मानव के भावों की अभिव्यक्ति है।"

* <u>बालक के भाषायी विकास की विशेषताएं</u> :-

(1) इसमें सीमित संख्या में वाणी-ध्वनियों (speech sound) का प्रयोग होता है।

(2) इसमें ध्वनियों को परम्परा संयुक्त रूप से जोड़ने पर अर्थपूर्ण शब्द बनते हैं।

(3) प्रत्येक भाषा में शब्दों का अर्थ मान्यताओं

(4) सभी भाषाओं को क्रमबद्ध रूप देकर वाक्यों का निर्माण होता है।

(5) यह मानव की अभिव्यक्ति का उत्तम साधन होता है।

(6) इससे व्यक्ति को दूसरे लोगों के विचारों या इच्छाओं को समझने में आसानी होती है।

(7) भाषा के विभिन्न रूप होते हैं।

(8) भाषा सार्थक ध्वनि है।

(9) भाषा परिवर्तनशील होता है।

(10) भाषा जन्मजात नहीं होती इसे अर्जित की जाती है।

(11) भाषा का संबंध समाज की संस्कृति से

* बाल विकास के विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास :-

- (1) शैशवावस्था में भाषा विकास (Language Development During Infancy)
- (2) बाल्यावस्था में भाषा विकास (Language Development During childhood)
- (3) किशोरावस्था में भाषा विकास (Language Development During Adolescense)

*(1) शैशवावस्था में भाषा विकास (Language Development During Infancy) :- जन्म के समय शिशु केवल रोता है या क्रंदन करता है यही बालक की प्रारंभिक भाषा होती है। 25 सप्ताह तक शिशु में सिर्फ स्वरों की संख्या अधिक

पाई जाती है। 8 से 10 माह की अवस्था में शिशु पहला शब्द बोलता है, एक वर्ष तक शिशु की भाषा कठोर होती है, जिसे समझना मुश्किल होता है। आरंभिक वर्षों में पहले बच्चा व्यंजनों या स्वरों को मिलाकर बोलता है जैसे - बा, ना, दा, मा इत्यादि।

18 माह के बालक की 26% भाषा में आ जाती है जैसे पानी को 'मम' कहता है या शब्द मिलाकर बोलना जैसे बाबा, मामा दादा इत्यादि। अतः बालक के शैशवावस्था में भाषा विकास पर उसके परिवार की संस्कृति और सभ्यता का प्रभाव पड़ता है। 2 से 3 वर्ष के बालकों की भाषा पर उसके वंशानुक्रम तथा वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। वातावरण जितना विस्तृत होगा बालक का शब्द भण्डार भी उतना ही अधिक विस्तृत होगा। इसके अतिरिक्त लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की भाषा विकास शैशवावस्था में अधिक होती है। इसी प्रकार जिन बच्चों में गूंगापन, हकलाना, तुतलाना आदि दोष होते हैं (stammering) उनका भाषा विकास मंद गति से होता है।

(2) बाल्यावस्था में भाषा विकास (Language Development During childhood) :-

बाल्यावस्था में बालक शब्दों को मिलाकर वाक्य के रूप में प्रयोग करने लगता है। इस अवस्था में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों के भाषा विकास में तीव्रता से वृद्धि होती है। इस अवस्था में भाषा विकास पर घर, परिवार

विद्यालय, समुदाय, पास-पड़ोस और सामाजिक परिस्थितियों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

अतः बाल्यावस्था में बालक वस्तुओं को देखकर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करता है तथा अपने से बड़ों के साथ अनेक प्रश्नों को करने की योग्यता रखता है। कभी-कभी त्रुटियाँ भी होती है परन्तु वे स्वयं उसे सुधारकर वाक्यों के रूप में प्रयोग करने लगता है। इस प्रकार इस अवस्था में बालक का प्रत्यक्ष ज्ञान स्थूल से सूक्ष्म की ओर होता है। साथ ही भाषा का ज्ञान भी मूर्त से अमूर्त की ओर होता जाता है।

(3) किशोरावस्था में भाषा विकास (Languge Development During Adolescence) :-

किशोरावस्था में बालकों में भाषा का विकास पूर्ण रूप से हो जाता है क्योंकि इस अवस्था के बालकों में अनेक शारीरिक परिवर्तन देखने को मिलता है। बालक विभिन्न भाषाओं में साहित्यों का अध्ययन करने में रुचि लेने लगता है। साथ ही किशोर बालकों में कल्पना शक्ति का भी विकास होने लगता है जिसके कारण वह अपनी कविता, कहानियों और चित्रों के माध्यम से भावनाओं को, व्यक्त करने लगता है। किशोर बालकों में सभी संकल्पनाओं का विकास होता है, जो उनको भावी जीवन की तैयारी का प्रतीक होती है। एकाकीन भाषा coding भाषा जिसमें कुछ प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। जिसे ~~विकास~~ किशोर अपने साथियों से विचार विमर्श के माध्यम के रूप में प्रयोग करता है।

होता जाता है अतः भाषा के माध्यम से किसी में सभी संकल्पनाओं का (अनुकरण क्रियाकलापों में शब्द …) होता है। साथ ही वह अपने जीवन में इसका प्रयोग करने को आदि को समझने लगता है अतः बालकों में बोलने की योग्यता का विकास जन्मजात न होकर अर्जित प्रक्रिया है। साथ ही भाषा विकास की प्रक्रिया में अनुकरण, प्रयास एवं मूल संवेदना और प्रेरणा का अत्याधिक योग होता है।

(लेनेबर्ग एक मनोवैज्ञानिक था जिसने भाषा-विकास की अवस्थाओं को निम्न तालिका के माध्यम से दर्शाया है।)

आयु	भाषा विकास
जन्म	क्रंदन
12 सप्ताह	कूकिंग (cooing), बलबलाना
16 सप्ताह	वाणी ध्वनियों में अंतर समझना, वाणी ध्वनियों के प्रति अनुक्रिया करना।
20 सप्ताह	स्वर एवं व्यंजन, ध्वनियाँ निकालना
6 महीने	एक शब्द (जैसे - मा, पा, बा, दा) तक बलबलाना
12 महीने	कुछ शब्दों को प्रतीक के रूप में समझना
18 महीने	लगभग 50 शब्दों तक बोलना, जिसमें कुछ शब्द संयुक्त करके बोलना, अभी भी बलबलाना
24 महीने	लगभग 50 शब्दों का शब्द भण्डार, जिसमें संज्ञा शब्द तथा दो शब्दों के वाक्य भी होते हैं।
30 महीने	शब्द भण्डार में अपेक्षाकृत तीव्र गति से वृद्धि
36 महीने, 3 वर्ष	लगभग 1,000 शब्दों तक का शब्द भंडार जिसमें से अधिकांश शब्द दूसरे लोग भी समझ लेते हैं।

(5) भाषा विकास के माध्यम से व्यक्ति ज्ञान - ~~विकास~~ विज्ञान तथा इतिहास आदि क्षेत्रों में प्रगति की ओर अग्रसर होता है।

(6) यह मानव, समाज और राष्ट्र को शक्ति प्रदान कर व्यक्ति को विकास का अवसर प्रदान करता है।

(7) भाषा, विचारों को जोड़कर रखता है अर्थात भाषा और विचार का गहरा संबंध होता है।

(8) भाषा ज्ञान बालकों में लिखने - पढ़ने की क्षमता प्रदान करता है जिससे उसको अच्छी शिक्षा मिलती है।

(9) भाषा द्वारा बालक स्वयं का मूल्यांकन कर सकता है और लोग उसके बारे में क्या सोचते है यह जान सकता है

(10) ज्ञान - विज्ञान को समझने के लिए भाषा आवश्यक है।

* बालक में भाषा विकास के निर्धारक तत्व :-

- → मानसिक योग्यता
- → सामाजिक परिवेश
- → शारीरिक स्वास्थ्य
- → आकार प्रति
- → पहरापन
- → लैंगिक विभिन्नता
- → बहुजन्म
- → द्विभाषावाद
- → परिपक्वता एवं अधिगम
- → अभिप्रेरणा तथा प्रलोभन

(1) मानसिक योग्यता :- (Mental Ability)

* भाषा विकास को प्रभावित करने वाले कारक -

- (i) बुद्धि (Intelligence)
- (ii) वातावरण (Environment)
- (iii) परिस्थिति (Situation)
- (iv) शारीरिक स्वास्थ्य (Physical health)
- (v) शरीर - रचना (Body structure)
- (6) लिंग - भेद (Sex-difference)
- (vii) परिपक्वता (Maturity)
- (viii) सीखने के अवसर (Learning opportunity)
- (ix) अनुकरण की प्रवृत्ति (Tendency of imitation)
- (x) अभिप्रेरणा (Motivation)
- (xi) निर्देशन (Guidance)
- (xii) वैयक्तिक भिन्नताएँ (Individual difference)

* भाषा की उपयोगिता (Uses of Language) -:

(1) बालक का भाषा विकास उनके लिए अन्य लोगों के साथ संपर्क स्थापित करने का सबसे बड़ा साधन है।

(2) भाषा विकास द्वारा बालक दूसरे लोगों से संपर्क स्थापित कर अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के विकास का अवसर प्राप्त करता है।

(3) भाषा विकास सामाजिक मूल्यों, आदर्शों और विचारों को समाज में बनाये रखता है।

(4) इससे बालक का संवेगात्मक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास होता है।

* सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं का भाषा पर प्रभाव :

(1) विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में भिन्न-2 भाषाएं बोली जाती है।

(2) जो माता-पिता शिक्षित तथा अच्छी सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले होते हैं, उनके बालकों का शब्द भण्डार सुस्पष्ट एवं सुन्दर होता है।

(3) अलग-अलग क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की भाषाएँ बोलने का तरीका अलग-2 होता है।

(4) यदि माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न हो तथा भाषा उच्चारण गंदे तरीके से किया जाये तो बालकों में भी उसी प्रकार का भाषायी विकास होता है।

(5) परिवार का सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण जितना विस्तृत होता है, बालक का शब्द-भण्डार उतना ही विस्तृत होता है।

* कक्षा-कक्षा में भाषा की उपयोगिता :

(1) कक्षा में अध्यापकों को भाषा के आधार पर विद्यार्थियों से भेद-भाव नहीं रखना चाहिए।

(2) भाषा में कठिनाइयों वाले शब्दों पर बालकों में भाषा विकास को महत्व देना चाहिए।

(3) कक्षा में अध्यापकों को स्वयं भी भाषा पर नियंत्रण होना चाहिए।

(4) कक्षा के बालकों में भाषा चलन की योग्यता का विकास करना चाहिए।

(5) समस्याग्रस्त भाषा बोलने वाले बालकों की पहचान कर उन्हें उचित मार्गदर्शन देना चाहिए।

★ भाषा विकास के लिए विद्यालय एवं शिक्षकों की भूमिका :

(1) बालक भाषा को अनुकरण के माध्यम से जल्दी सीखता है। इसलिए शिक्षकों को विद्यालय में सभ्य एवं सांस्कृतिक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(2) बालकों को विद्यालयों में उच्चारण संबंधित प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए।

(3) शिक्षकों को विद्यालय में बालकों के भाषा विकास के लिए 'प्रशंसा' जैसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

(4) जिन बालकों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास पूर्ण रूप से नहीं होता है, उनका भाषा विकास देर से होता है अतः शिक्षकों को उनकी उपेक्षा न करते हुए सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

(5) शिक्षकों को बालकों में आत्मविश्वास जाग्रत करना चाहिए जिससे उनमें भाषा विकास जैसे- हकलाने, तुतलाने इत्यादि संबंधित विकार दूर हो जावे।

(6) शुद्ध वाक्य प्रयोग तथा शुद्ध उच्चारण का प्रशिक्षण प्रदान कर शिक्षकों को बालकों का भाषा विकास करना चाहिए।

(7) शिक्षकों को भाषा विकास के लिए प्राथमिक स्तर पर रचना कार्य जैसे- वाक्य बनाना, वाक्यों को शुद्ध रूप से लिखना, शब्द प्रयोग, पत्र-लेखन, प्रश्न-सूचक वाक्य बनाना इत्यादि कार्यों को करना चाहिए।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भाषा बालक के विकास के विभिन्न अवस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण तत्व है जो उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर उसे अपने लक्ष्यों तक पहुँचाती है।
अतः भाषा का ज्ञान बालक के जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। जो विभिन्न विचारों का आदान-प्रदान कर विविधताओं को दूर कर समाज में सभ्य नागरिक बनाता है।